

भारत सरकार  
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय  
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग  
लोक सभा  
अतारांकित प्रश्न सं. 2012  
11 मार्च, 2025 को उत्तरार्थ

**विषय: एनएचआरडीएफ में उपवेद विद्यालय की स्थापना**

2012. श्री राजाभाऊ पराग प्रकाश वाजे:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार स्थानीय किसानों, विशेषकर अंगूर, प्याज और अनार की खेती करने वाले किसानों के लिए वास्तविक समय कालीन मौसम पूर्वानुमान और जलवायु-अनुकूल फसल अनुसंधान जानकारी उपलब्ध कराने हेतु चितेगांव, नासिक में राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (एनएचआरडीएफ) केंद्र में उपवेद विद्यालय की स्थापना पर विचार करेगी;

(ख) यदि हां, तो जलवायु-अनुकूल कृषि संबंधी राष्ट्रीय नवाचार (एनआईसीआरए) और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) जैसी केंद्रीय योजनाओं के तहत उक्त पहल को मंजूरी देने और वित्तपोषित करने के लिए उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है, जिससे कि नासिक के किसानों को जलवायु-संबंधी चुनौतियों के लिए बेहतर तरीके से तैयार किया जा सके;

(ग) सरकार द्वारा यह किस प्रकार सुनिश्चित किया जाएगा कि चितेगांव केंद्र मौसम पूर्वानुमान की सटीकता में सुधार और फसल-क्षति को कम करने के लिए उन्नत मौसम निगरानी उपकरणों और डेटा एनालिटिक्स सुविधा से लैस हो; और

(घ) क्या नासिक और उत्तरी महाराष्ट्र में किसानों के लिए जलवायु अनुकूलन संबंधी सहायता की तकाल आवश्यकता को देखते हुए इस सुविधा की स्थापना के लिए कोई समय-सीमा निर्धारित की गई है?

**उत्तर**

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क) से (घ): वर्तमान में, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के पास नासिक के चितेगांव में

राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (एन.एच.आर.डी.एफ.) केंद्र में उपवेद विद्यालय स्थापित करने का कोई प्रस्ताव नहीं है। तथापि, जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आई.पी.सी.सी.) प्रोटोकॉल का उपयोग कर जलवायु अनुकूल कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार (एन.आई.सी.आर.ए.) के तहत जिलों का चयन किया गया था। महाराष्ट्र में, दो जिले नामतः नांदेड़ और बीड को "बहुत अधिक जोखिम (वेरी हाई रिस्क)" और 11 जिले नामतः नंदुरबार, अकोला, वाशिम, वर्धा, चंद्रपुर, हिंगोली, परभणी, जालना, अहमदनगर, लातूर और उस्मानाबाद "अधिक जोखिम (हाई रिस्क)" श्रेणी में आते हैं। इनमें से छह जिलों नामतः अहमदनगर, बीड, जालना, लातूर, नंदुरबार और उस्मानाबाद में अनुकूलन करने के प्रयास जारी हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.), नासिक सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए उपयुक्त अंगूर, प्याज और अनार सहित बागवानी फसलों हेतु जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों/ किस्मों के विकास के लिए अपने विभिन्न फसल विशिष्ट संस्थानों में अनुसंधान कर रही है।

इसके अतिरिक्त, एन.एच.आर.डी.एफ., समेकित बागवानी विकास मिशन (एम.आई.डी.एच.) के तहत प्याज और लहसुन के अच्छे बीजों के उत्पादन एवं आपूर्ति सहित सज्जियों के विकास से संबंधित कार्यक्रमों का कार्यान्वयन कर रहा है।

\*\*\*\*\*